प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

विश्वविद्यालय में मनाया गया रेडियो दिवस

पंतनगर। १४ फरवरी २०१८। रेडियो, एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो हमेशा सीखने, खोजने, मनोरंजन और एक साथ मिलकर आगे बढ़ने का केन्द्र बिन्दु बना रहा और रहेगा साथ ही रेडियो हमें हमेशा अपनों को नजदीक लाता है। आज सोशल मीडिया के दौर में भी रेडियो युवा का सबसे पसंदीदा मनोरंजन का साधन रहा है, यह कहना है विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. ए.के. मिश्रा, का विश्व रेडियो दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में, जो विश्वविद्यालय की सामुदायिक रेडियो सेवा पंतनगर जनवाणी द्वारा आयोजित किया गया था जिसमें रेडियो से जुड़े लगभग ८० से अधिक लोग उपस्थित थे।

इससे पूर्व सभा में उपस्थित सभी रेडियो प्रेमियों को विश्व रेडियो दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कुलपति ने कहा कि रेडियो संचार का शक्तिशाली माध्यम है। रेडियो ने हमारे जीवन को कई मायनों में प्रभावित किया चाहे स्वास्थ्य की बात हो या कृषि की, शिक्षा की या सरकारी योजनाओं की। रेडियो की आवाज पिछले लगभग ६० दशकों से हमारे जीवन में रंग भर रहा है और भविष्य में भी इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रयासरत है। उन्होंने यह भी बताया कि अपने देश भारत में आकाशवाणी के ४२० स्टेशन है जिनकी ९२ प्रतिशत क्षेत्र में लगभग ९० प्रतिशत आबादी तक पहुंच है। आकाशवाणी २३ भाषाओं और १४ बोलियों में पूरे देश में प्रसारण करता है। साथ देश में पंतनगर जनवाणी की ही भांति २१४ सामुदायिक रेडियो केन्द्र भी सक्रिय है।

इससे पूर्व निदेशक संचार, डा. ज्ञानेन्द्र शर्मा, ने अपने उद्बोधन में कहा कि यूनेस्को ने सन् २०११ में विश्व स्तर पर रेडियो दिवस मनाने का निर्णय लिया। १३ फरवरी का दिन विश्व रेडियो दिवस के रूप में इसलिए चुना गया क्योंकि १३ फरवरी सन् १९४६ से संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा रेडियो के प्रसारण की शुरूआत की गई। साथ ही डा. शर्मा ने यह भी बताया कि रेडियो दुनिया का सबसे सुलभ मीडिया है। दुनिया के किसी भी कोने में बैठकर रेडियो सुना जा सकता है। पढ़े-लिखे से लेकर अनपढ़ तक सभी रेडियो से जुड़े हुए है और अब तो बहुत से विश्वविद्यालयों में रेडियो और रेडियो कार्यक्रम के ऊपर शोध भी किये जा रहे है ताकि इस बदलते समय में लोग रेडियो से जुड़े रहे।

संयुक्त निदेशक संचार, डा. शिवेन्द्र कुमार कश्यप, ने बताया कि रेडियो के माध्यम से आम आवाम की आवाज आसानी से पहुंचाई जा सकती है और इसकी अहमियत आज भी है। और इसी अहमियत को बनाये रखने में जनवाणी भी पिछले लगभग सात सालों से २५० से अधिक गावों के लोगों की आवाज बनकर उनके जीवन में आवाज और ध्वनि की शक्ति के जरिये रंग घोल रहा है।

कार्यक्रम के अंत में अतिथियों द्वारा विश्व रेडियो दिवस के अवसर विद्यालयी स्तर पर कला एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन में विजेता विद्यार्थी को प्रमाण-पत्र और पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

कुलपति, प्रो. ए.के. मिश्रा, विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए ।